आध्यात्मिक उपचार : कुदृष्टि – खण्ड १

नमक-राई, नारियल, फिटकरी आदि से कुदृष्टि कैसे उतारें ?

(कुदृष्टिसम्बन्धी अध्यात्मशास्त्रीय विवेचनसहित)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

श्रीमती प्रियांका सुयश गाडगीळ एवं अन्य

सनातन संस्था

सनातनकी ग्रन्थसम्पदाकी अद्वितीयता !

सनातनके अधिकांश ग्रन्थोंमें प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग 'सूक्ष्मसे प्राप्त दिव्य ज्ञान' है एवं वह पृथ्वीपर उपलब्ध ज्ञानकी तुलनामें अनोखा है !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीके अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.६.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाका उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृतिके वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्सके संसदमें सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

कुछ सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंका परिचय !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली गाडगीळ (M.Sc.)
आप परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी एक आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी हैं । आप सूक्ष्मसे ज्ञान प्राप्त करती हैं। अध्यात्म, कला आदि क्षेत्रोंके ज्ञानियोंसे ज्ञानार्जन करने और आध्यात्मिक दृष्टिसे मूल्यवान सहस्रों वस्तुओंका संरक्षण करने के लिए अनवरत भारतभ्रमण करती हैं ।

श्रीमती प्रियांका सुयश गाडगीळ
आप अध्यात्मकी विविध घटनाओंका सूक्ष्म परीक्षण एवं सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्रांकनकी सेवा करती हैं । आप वैज्ञानिक उपकरणोंकी सहायतासे आध्यात्मिक स्तरका शोधकार्य, तथा सूक्ष्म जगतके विषयमें आध्यात्मिक शोध भी करती हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. कुदृष्टि लगनेका अर्थ क्या है ? १५

२. कुदृष्टि लगनेकी सूक्ष्म स्तरीय प्रक्रिया १६

३. कुदृष्टि लगनेके परिणाम अथवा परखने हेतु लक्षण १८

४. 'कुदृष्टि उतारने'का अर्थ क्या है ? १९

५. कुदृष्टि उतारनेके लाभ २०

६. कुदृष्टि उतारनेकी प्रक्रियामें भाव महत्त्वपूर्ण २१

‘कुदृष्टि’सम्बन्धी संयुक्त भूमिका

बालकको काजलका टीका लगानेका संस्कार आज भी किया जाता है । आज भी कुछ वृद्ध अनुभवी स्त्रियां घर आए सम्बन्धियोंकी लिम्बलोण (नींबू और नमक) से कुदृष्टि उतारती हैं । जब सदियोंसे चली आ रही परम्पराओंका पालन किया जाता है, तब निश्चित ही उसके पीछे कुछ अध्यात्मशास्त्र होगा, यह हमें समझ लेना चाहिए ।

वर्तमानके स्पर्धात्मक और भोगवादी युगमें अधिकांश व्यक्ति ईर्ष्या, द्वेषभाव, लोकेषणा, परलिंगकी ओर अनिष्ट दृष्टिसे देखने आदि विकृतियोंसे ग्रस्त होते हैं । इन विकृतिजन्य रज-तमात्मक स्पन्दनोंका कष्टदायक परिणाम सूक्ष्मसे अनजानेमें दूसरे व्यक्तियोंपर होता है । इसे ही उस व्यक्तिको ‘कुदृष्टि लगना’ कहते हैं । इसी प्रकार परिवारमें झगडा होना, व्याधि, आर्थिक अडचन, बुरे स्वप्न दिखाई देना, निराशा, धूम्रपान (सिगरेट)की लत, मद्यका व्यसन जैसी समस्याएं अब नित्यकी हो गई हैं। वर्तमानमें जीवनकी ८० प्रतिशत समस्याओंका कारण स्थूल रूपसे दिखाई देता हो, तो भी वास्तविक कारण सूक्ष्म, अर्थात अनिष्ट शक्तियोंकी पीडा ही है । अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट, कुदृष्टि लगनेका ही एक प्रकार है ।

संक्षेपमें, जीवन समस्यारहित और आनन्दमय बनाना हो, तो ‘कुदृष्टि उतारना’, इस सरल घरेलू आध्यात्मिक उपचारका आलम्बन अपनाना सदा उपयुक्त होता है । आजके वैज्ञानिक युगमें विचरण करते समय ‘कुदृष्टि लगना और कुदृष्टि उतारना’, इस शब्दका उच्चारण भी करनेसे बुद्धिजीवी उसे ‘प्राचीन परम्परा’ कहकर हीन समझते हुए नाक-भौंह सिकोडेंगे । वैज्ञानिक युगमें प्रत्येक बात शास्त्रीय पद्धतिसे प्रस्तुत करनेपर उसपर शीघ्र ही विश्वास होता है । इसलिए दृष्टसम्बन्धी ३ खण्डोंमें कुदृष्टि लगनेकी, उसका परिणाम, विविध घटकोंसे कुदृष्टि उतारनेकी पद्धति, बालककी कुदृष्टि उतारनेकी सरल पद्धतियां, कुदृष्टि उतारते समय ध्यान देनयोग्य

बातें इत्यादि स्पष्ट करते समय स्थूल माध्यमोंसे न समझमें आनेवाली बातें 'सूक्ष्म परीक्षणों' और 'सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्रों'के द्वारा स्पष्ट की गई हैं।

सनातनके साधक समष्टि साधना कर 'ईश्वरीय राज्य' स्थापित करनेके लिए तो अनिष्ट शक्तियां 'आसुरी राज्य' स्थापित करनेके लिए प्रयत्नरत हैं। इस कारण अनिष्ट शक्तियां साधकोंको विविध प्रकारसे बडी मात्रामें कष्ट देती हैं । साधकोंको हो रही अनिष्ट शक्तियोंकी पीडापर उपायस्वरूप वर्ष २००१ से सनातनके साधकोंकी कुदृष्टि उतारना प्रारम्भ किया है । कुदृष्टि उतारनेसे पूर्व साधकोंकी स्थिति, कुदृष्टि उतारनेसे उनपर हुआ परिणाम एवं हुआ लाभ, यह साधकोंकी अनुभूतियोंद्वारा प्रस्तुत किए जानेसे कुदृष्टि उतारनेकी पद्धति शास्त्रसम्मत है, यह प्रमाणसहित सिद्ध भी हुआ है ।

कुदृष्टि उतारनेका महत्त्व समझकर अधिकाधिक लोग कुदृष्टि उतारकर अपने सभी ओर निर्मित कष्टदायक स्पन्दनोंका आवरण दूर कर साधनासे ब्रह्माण्डकी ईश्वरीय तरंगोंका लाभ उठाएं, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !

– संकलनकर्ता

चिरन्तन आनन्दप्राप्तिका मार्ग दिखानेवाला सनातनका ग्रन्थ !

आनन्दप्राप्ति हेतु अध्यात्म

(सुख, दुःख एवं आनन्द का अध्यात्मशास्त्रीय विश्लेषण)

- मानवी जीवनमें सुख और दुःख क्यों आता है ?
- सुख और आनंद, इन दोनोंमें भेद क्या है ?
- मानवी मन संस्कारानुसार कैसे कार्य करता है ?
- प्रारब्ध अथवा भाग्य क्या है ?
- दुःखका निवारण होकर निरन्तर आनन्द पानेके लिए क्या प्रयास करें ?